Indian Streams Research Journal
ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

दक्षिण हरियाणा के लोकगीतों में विवाह परम्परा

डॉ. महासिंह पूनिया[1] व यशवन्ती[2]
[1]कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय , कुरुक्षेत्र.
[2]शोधार्थी , कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय , कुरुक्षेत्र.

प्रस्तावना

दक्षिण हरियाणवी लोकगीतों में स्थानीय जीवन की रंग बिरंगी छटा है। लोकगीतों में यहां के वासियों का रहन-सहन, खान-पान, रिति-रिवाज, तीज-त्योहार, उत्सव तथा संस्कृति के स्पष्ट चित्र उभरते है। लोकगीत लोक जीवन की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। ये लोक संस्कृति के मुँह बोलते चित्र है। लोक समाज के सुख-दुख लोकगीतों में अभिव्यक्त होते है। त्योहार व उत्सव पर लोकगीत खुशी को दुगना कर देते है। जबकि मानसिक पीड़ा व थकान को कम कर देते है। लोक शब्द की प्राचीनता- श्रीमद्भगवद्गीता में लोकशब्द का प्रयोग लोक, समाज व संसार आदि सन्दर्भो में मिलता है-

कर्मणैव हि संसिद्विमास्थिता जनकादाय:।
लोक संग्रमेवापि सपश्यन्कर्तु मर्हसि।।
यद्यदा चरित श्रेष्ठस्तत देवतरो जन:।
स यत्प्रणामं कुरूते लोक स्तदनुर्क्तते।।[1]

डॉ कृष्ण देव उपाध्याय के शब्दों में- आधुनिक सभ्यता से दूर, अपने प्राकृतिक परिवेश में निवास करने वाली, तथाकथित, अशिक्षित एवं असंस्कृत जनता को लोक कहते है, जिनका आचार-विचार एवं जीवन परम्परायुक्त नियमों से नियंत्रित होता है।''

दक्षिण हरियाणा के लोकगीतों में विवाह परम्परा-

विवाह संस्कार पति-पत्नी के रिश्ते का पवित्र बन्धन है। समाज की गतिशीलता का आधार विवाह होता है। हमारे समाज में विवाह को धार्मिक संस्कार माना जाता है।
लोकमानस धार्मिक संस्कारों को जीवन को आर्दश मानता है। विवाह न केवल धार्मिक संस्कार अपितु सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण कत्तर्व्य भी है। विवाह लड़का व लड़की को पवित्र बन्धन में बाँधकर गृहस्थ जीवन की और उन्मुख करता है। विवाह संस्कार का प्रत्येक रीति-रिवाज दक्षिण हरियाणा के लोकगीतों में स्पष्ट झलकते है। इन लोकगीतों की गूँज मात्र से पता चल जाता है कि विवाह में कौन सी रस्म चल रही है।
विवाह संस्कार में औरते सामूहिक रूप से गीत गाती है। वर पक्षा के यहाँ बन्दड़े गीत तथा कन्या पक्ष के यहाँ बन्दड़ी गीत को प्राथमिकता दी जाती है। सगाई से विदाई तक प्रत्येक रस्म लोकगीत की गूँज में पूर्ण होती है।

सगाई-

सगाई से पूर्व कन्या का पिता व संबंधी वर देखने जाते है। लड़का पसन्द आ जाने पर लड़के वाले लड़की को देखने जाते है। यदि लड़की पसन्द आ जाती है तो सगाई की बाते तय हो जाती है। स्थानीय स्त्री-पुरूष आमंत्रित किये जाते है। उन सब समक्ष लड़के के मस्तक पक्ष कन्या का पिता जी या दादा जी तिलक करता है। कुछ रूपये और नारियल उसे देता है। इससे वर रोकना व अपनाना कहते है। इसके बाद कन्या पक्ष की तरफ से लड़के के लिए वस्त्र मिठाई फल व रूपये लेकर कुछ व्यक्ति आते है। लड़के को आँगन में चौकी डालकर बैठाया जाता है और सभी उपस्थित व्यक्तियों के सामने विवाह की बात पक्की कर लेते है। सगाई में मिलने वाली वस्तुऐं लकड़ा अपनी मां के आँचल में डाल देता है। उपस्थित व्यक्तियों में मिठाई बांटी जाती है। सगाई के समय यह लोक गीत गाया जाता है।

कठै तै आया नारियल, कठै तै आया म्हारै छैल बन्न का टिकला जी
बागा तै आया नारियल, शहरा तै आया म्हारै छैल बन्नै का टिकला जी
गोद उतरो नारियल, माथै उतरो महारै छल बन्ने का टिकला जी, [2]

2.लग्न (टेवा) -

लग्न कन्या व वर दोनों पक्षों से संबधित होता है। कन्या को गद्दी युक्त चौकी पर बैठाकर ब्राह्मण द्वारा लग्नपत्रिका लिखी जाती है। इस पत्रिका में हरी दूब हल्दी की गाँठे, हरी दूब, सुपारी व चावल रखे जाते है और नाल बाँध दी जाती है। औरते लोक की गाती है-

दादा मेरे कै चार हवेली चारू तो जगमग हो रही।
पहली हवेली लाडो जन्म लिया था।
दूजी म्ह होम कराया।
तीजी हवेली लाड़ो लग्न लिखा था।
चौथी म्ह हुई पराई।[3]

वर-पक्ष-

कन्या के यहां से टेवा लेकर वर पक्ष के घर जाते है। इस उत्सव पर वर पक्ष वाले स्थानीय लोगों का आमंत्रित करते है। लड़के को चौकी पर बैठाया जाता है। ब्राह्मण मंत्रोच्चारण करता हुआ पत्रिका लड़के को देता है और फिर लेकर खोलकर पढ़ता है। पत्रिका में वर-वधू के बान और विवाह का उल्लेख होता है। लड़का शगुन में मिल रूपये, नारियल और वस्त्र अपनी माँ के आँचल में डाल देता है। इस अवसर पर मिठाई या शक्कर स्त्री-पुरूषों में बांटी जाती है। औरतें इस अवसर पर लोकगीत गाती है-

जद म्हारै बन्दड़ै का टेवा री आया।
नौ मण शक्कर बटाई रंग बन्दड़ा।
सुन्दर रूप हरियाला म्हारा बन्दड़ा।[4]

भात न्यौतना-

वर की माता एवं कन्या की माता अपने-अपने भाइयों के निमन्त्रण देने जाती है। इससे भात न्यौतना कहा जाता है। भात न्यौतने की सामग्री में गुड़ की भेली, एक रूपया और चावल होते है। भाई के घर पहुँचने पर औरतें भात के गीत गाती है।

भात न्यौदंण आ ए गई रै बतला ले गोविन्द भाई।
बैठ बतला ले नै रै मेरी भावज आकड़ आई।
भावज तेरी के कर लेगी ए मैं कर दूँ मन चाई।
सूठ चादर ले आया ए कम्बला की दे आया साई।
माला और चुन्दड़ी ले आया ए गठ्ठी की दे आया साई।
भात न्यौदण आ ए गई रै बतला यशपाल भाई।[5]

हलदात-बान-

वर पक्ष और कन्या पक्ष में यह समान रूप से होती है। हल्दी की सात गांठो और थोड़े से जौ लेकर सात सुहागिनें उस सामग्री को ऊखल में डालकर मूसल से सात-सात चोटें लगाती है। इन सात स्त्रियों को कलावे बाँधे जाते है। यही सात सुहागिनें फिर बर या कन्या को तेल चढ़ाती है। इस समय का गीत ये है-

एक उखल डोरा, मुसल डोरा।
डोरा म्हारैं सात सुहागणहाथ।[6]

चौक पूर कर उस पर पटड़ा या चौक बिछाते हैं। बुलाई गई औरतें अपने साथ थोड़ा-थोड़ा अनाज लाती है। इसे लड़के या लड़की पर न्योछावर कर नाइन को दिया जाता है। पटड़े पर बैठने पर यह गीत गाया जाता है।

पटड़ा गीत-

बैठना

कहियों रै उस कुम्हार कै लड़कै नै कुंडा तो लावै म्हारे लाल का,
राम रत्न सिंह का,छल बदन सिंह का।

कहयों रै उस खाती के लडकै नै पटडा तो
तो लाव म्हारे लाल का राम रत्न सिंह का, छल बदन सिंह का।[7]

तेल चढ़ाना व उबटणा मसलना-

जौ का आटा और हल्दी मिलाकर उसमें तेल डालते है। फिर हलदात वाली सात सुहागिनें दूब लेकर क्रमशः लड़के या लड़की की अंगुलियों, घुटनों, वक्षस्थल, स्कंध तथा मस्तक से तेल और हल्दी का स्पर्श करवा कर तेल चढ़ाती है। तेल चढ़ाने के समय गीत गाया जाता है। तले चढ़ाने के बाद उबटना मसला जाता है। उबटना मसलने का उद्देश्य रंग निखारना है। उबटन के बाद स्नान कराया जाता है। इन सभी क्रियाओं में क्रमशः ये गीत गाये जाते है।

तेल का गीत-

तेइए तेलण तेल, तेल चपा की रेल
कुलताज घर झबोलड़िया, सुशीला तेल चढ़ाइयों

उबटना गीत-

काहे कटोरी बटणा, काहे कटोरी तेल।
एक लोडो बैठी बटणा जौ चणा का बटणा।
राई, चमेली तेल का तेल, मैल झड़ पड़ थार जड म्ह।
नूर चढ़ थार अंग।[8]

उबटना मसलने के बाद झोल डाला जाता है। झोल का गीत गाया जाता है-

झोल का गीत-

दादा मेरा झोल घालियों, दादी मसल न्हावाईयों
ताऊ मेरा झोल घालियो, ताई मसल न्हावाइयों

नहाने का गीत-

ताता पाणि ए समुद्रा का, पोता नहाइयों ए म्हारै रामचन्द का
ताता पाणि ए समुद्रा का बेटा नहाइयों ए म्हारै महेंद्र का।[9]

नहाने के बाद शादी में आई बहन या बुआ आरता करती है। आरता का गीत गाया जाता है।

आरता गीत-

एक डाल छोटा, पेड़ मोटा कर ऐ सुहागण आरता।
एक दूर देश तै बुआ ए कर ए सुहागण आरता।
एक दूर देश तै बाहण आई कर ए सुहागण आरता
एक हाथ लीरा गोद बीरा कर एक सुहागण आरता।[10]

बान बैठाने के बाद शाम को प्रति दिन औरते बन्ना या बन्नी का गीत गाती है। अगर लड़के की शादी है तो बन्ना तथा लड़की की शादी है तो बन्नी गाती है।

बन्ना का गीत-

तेरै गले म्ह रै सोने का डोरा सज्जा रै बन्दड़ा।
तेरी दादी रै घोड़ी कै पीछ खड़ी रै बन्दड़ा।
वा गाव रै राग सुथरा समझ बन्दड़ा।
तेरे मुख पर रै ओम चन्दा खिला रै बन्दड़ा।[11]

बन्नी गीत

बन्दड़ी हे दादा कै जाणा छोड़ दे, आ रहा तुम्हारा भरतारिया।
चढ़ रहा ए घोड़े की सवारियाँ, ले रहा ए ढाल, तलवारियाँ।
मार गया ए मृग दो ए चारियां, बन्दड़ी ए बाबू कै जाणा छोड़ दे।

मेंहदी की रस्म

विवाह से एक दिन पूर्व कन्या पक्ष तथा वर पक्ष के यहां मेंहदी की रस्म होती है। बन्ना व बन्नी को मेंहदी लगाई जाती है। सभी औरते बड़े उत्साह व चाव से मेंहदी लगाती है तथा लोकगीत गाती है-

म्हारै री आँगण म्ह जबर पेड़ मेंहदा।
मैं झुरड़- झुरड़ लाऊँगी मेंहदा।
मेरे गौरे-गौरे हाथा म्हा रचाऊँगी मेंहदा
मेरे राजा नै जाएं दिखाऊँगी मेंहदा।[12]

घुडचढ़ी की रस्म-

बारात चढ़ने से पूर्व वर-पक्ष के यहाँ घुडचढ़ी की रस्म होती है। गांव में जिस देवी व देवता को धोकते है। बन्ने को घोड़ी पर बैठा कर मन्दिर में जाते है तथा बन्ने से उस देवी व देवता की धोक लगवाई जाती है। औरते गीत गाते हुए घोड़ी के पीछे चलती है। वर की बहन थाली में थोड़े चावल डालकर दो या चार चावल उठाकर वर पर फेंकती हुई चलती है। इसे चावल मारना कहा जाता है। बच्चे, बूढे, पुरूष औरते सभी झूमते हुए घोड़ी के आगे नाचते हुए अपनी खुशी व्यक्त करते है।

घुड़चढ़ी का गीत

ऐसी सुन्दर श्याम घोड़ी म्हारै दरवाजे क्यो खड़ी।
किस नै बुलाई, किसनै सजाई, किस के कारण आई।
दादा बुलाई, दादी सजाई बन्ने के कारण आई।
ऐसी सुन्दर श्याम घोड़ी म्हारै दरवाजै क्यों खड़ी।

माँ का दूध पिलाना-

घोड़ी पर चढ़ने के बाद 'माँ का दूध' पिलाने की रस्म अदा की जाती है। माँ को नेग दिया जाता है। घोड़ी पर बैठते समय जो गीत गाया जाता है बहुत भावपूर्ण है:-

दस मास रे बेटा बोझ मरी थी मायड़ का निरणाा ले चढ़या,
अपनी मायड़ कै मैं बादी री ल्यादूँ, बड़े साजन की धीयड़ी।।

बारात चढ़ना-

बारात घर से प्रस्थान करती है। औरतें समवेत स्वर में लोकगीत गाते हुए बारात चढ़ाती है-

आगै दादा चढ़े बाराती, पीछै बन्दड़ा ए आप चढ़ा।
चढ़ जा रे हरियाले बन्दड़े, धर ले पैर गलीचे पै।

बधावा-

बधावा के गीत लड़के की शादी में बारात चढ़ने के बाद और लड़की की शादी में विदाई के बाद गाए जाते है।

बे-बे कालर म्ह तम्बू तणा रै सै उठै खींच रही रेशम डोर सखी

आज बधावा ऋषि दयानन्द, बे-बे सेवा बनाई माँ-बाप की
उन्नै बीस बरस पाली ए सखी आज बधावा ऋषि दयान्नद का

खोड़िया की रस्म-

बारात जाने के बाद वर पक्ष के यहाँ महिलाएँ नाच-गाने का कार्यक्रम रखती है। जिसे खोड़िया कहा जाता है। खोड़िया का मुख्य भाग विवाह की नकल प्रस्तुत करना है तथा महिलाऐं लोकगीत गाते हुए नाचती है।

जेठ मेरा साड़ी लावै ए, देवर मेरा लावै सूठ।
उत्तणी का चुनी म्ह बलोव ए, ए जाये रोय नै रोप दिया चाला।

मिलनी की रस्म-

उधर कन्या पक्ष के यहां बारात पहुँचती है। कन्या पक्ष वाले उनका स्वागत करते है तथा शुगुन रूप में कुछ देते है।

ढुका की रस्म-

बन्दड़े को घोड़ी पर बैठा कर कन्या पक्ष के दरवाजे पर लाया जाता है तथा पीछे-पीछे बारात चलती है। इसे हरियाणा में ढुका बोला जाता है। इस अवसर कन्या पक्ष के दरवाजे पर खड़ी औरते ढुका का गीत तथा सीठणे गाती है सभी सीठने हास्य रस की पिचकारी होते है। इससे सभी आनन्दित होते है। बुरा नहीं माना जाता-

ढुका का गीत-

बाजा ए नगाड़ा रणजीत का ए म्हारै ब्याहवण आया।
अपनी सीम नै छोड़ की ए म्हारै ब्याहवण आया।
अपनी बाहण छोड़ की ए म्हारै ब्याहवण आया।
बाजा ए नगाड़ा रणजीत का ए म्हारै ब्याहवण आया।

सीठणे-

सुण मेरे मौसा सुणी कै ना बे-बे झालरा लाया कै ना।
खुब सुणी रै बेटा खुब सुणी भ्याणी म्ह सोना मिला नहीं।

बन्दड़े दादी नै कहियों, अंग्रेजी बाजा लावै।
बूढ़े-ठेरा ना लावै, बालक बच्चा ना लावै।
छल्ले-छोरा की बारात जोड़ी सज्जती सी आवै।

फेरों की रस्म-

ढुका के बाद फेरों का कार्यक्रम होता है। घर के आँगण में सुन्दर बेदी सजाई जाती है। आरम्भ में पण्डित द्वारा विवाह मन्त्रोच्चारण किया जाता है। बाद में कन्या के मामा द्वारा कन्या को विवाह मंडप में फेरों के लिए बैठाया जाता है। अग्नि को साक्षी मानकर वर-

वधू फेरे लेते है। औरते फेरों का लोकगीत गाती है-
गढ़ छोड़ रूकमण बाहर आई, खुशी तो छाई म्हारै आंगण।
तेरी रै कमल सिंह पोती रै ब्याहियों फेरा वै फूल बखेरियों।
पहला फेरा लिजिये दादा की ए पाती।
दूजा फेरा लिजिये बाबू की एक बेटी।

हलवे-हलवे चाल म्हारी लाडो, दिन बतेरा रैहा सै।

तावला-तावला चाल उतणी के दिन छिपण होरा सै।

कन्यादान-

इसी समय 'कन्यादान' किया जाता है। माता-पिता कन्यादान में धनराशि आदि है कन्यादान के बाद कन्या पर ससुराल का पूर्ण हक हो जाता है। इस अवसर पर कन्यादान का गीत गाया जाता है।

कन्या का दान म्हारा दादा ए देगा,
जिसकी छाती भारया हो राम।
सोना भी देगा, चाँदी भी देगा, कन्या का दान दोहेला हो राम

थापा-

फेरों के बाद कन्या व वर को कमरे में ले जाते है जहाँ देवताओं की धौक लगाई जाती है तथा थापा लगवाया जाता है इस समय कन्या की सहेलियां दुल्हे से हंसी मजाक करती है तथा उसे 'छन्न' सुनाने के लिए बाध्य करती है। 'छन्न' एक प्रकार का दन्न होता है।

छन्न पकैया छन्न पकैया छन्न पै बालूशाही,
थारी बेटी नै 'राखूं' जाणू आख्या म्हं स्याही।

विदाई की रस्म-

फेरो के बाद विदाई का समय आ जाता है विदाई की परम्परा सबसे अधिक करूण व मार्मिक होती है। इस अवसर पर गाए जाने वहाँ गीत इतने मार्मिक होते है की हृदय को छू जाते है। कठोर हृदय भी इन गीतों की स्वर-लहरियों को सुन कर पिघल जाता है।

मैं तो गुड़िया भूली हो, बाबल तेरे आल्या म्हं।
म्हारी पोती खेलै ए, धीयड़ घर जा अपणै।

रे बीरा एक बै घेरा म्ह जाइए, रे बाबल की धीर बँधाइए।
रे उन्नै रो-रो सुजा आँख, बेटी मेरी तडकै डिगर ज्यागी।

दक्षिण हरियाणा में विवाह के आरम्भ से लेकर सम्पूर्ण होने तक हर रीति-रिवाज रस्म लोकगीत के साथ पूर्ण होती है। अतः कोई भी कार्यक्रम व रस्म बिना लोकगीत के पूर्ण नहीं होती है। हर रस्म के अपने लोकगीत होते है। लोकगीत संस्कृति की धरोहर है। ये समाज के दपर्ण है तथा संस्कृति के मुंह बोलते चित्र है। जिनमें पौराणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा पारिवारिक छवि प्रतिबिम्ति होती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. जगदीश नारायण भोलानाथ शर्मा। हरियाणा प्रदेश के लोकगीतों का सामाजिक पक्ष, पृ. 85
2. डॉ. महासिंह पूनिया: लोक साहित्यिक धरोहर, पृ. 17
3. डॉ भीम सिंह: हरियाणा के लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन पृ. 55, 56, 70
4. रमाकान्ता: भारतीय लोकगीतों हरियाणा का योगदान पृ. 63, 76
5. डॉ भीम सिंह मलिक: हरियाणा का लोक साहित्य पृ. 46, 53
6. डॉ रेखा शर्मा: हरियाणा के लोकगीतों में भक्ति भावना पृ. 43
7. रीता धनकर: हरियाणा का लोक संगीत
8. डॉ किरण ख्यालिया: म्हारे-गीत म्हारी रीत पृ. 5,6,8
9. डॉ. महासिंह पूनिया: हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर, पृ. 37

10. डॉ पूर्ण चन्द शर्मा: हरियाणवी साहित्य व संस्कृति पृ. 72
11. डॉ. राम कुमार: आध्यात्मिकता और हरियाणवी संस्कृति बोध
12. डॉ लाल चन्द गुप्त मंगल: हरियाणा का लोक साहित्य, पृ. 23, 39